

९४  
४

अथ

१४  
४

ग्रन्थनामः-

॥ वैदिक परिभाषा ॥

Vedic Paribhasha

कृतेनामः-

१

विषयः-

॥ वैदिक साहित्यम् ॥

२१२



अथ वैदिकपरिभाषा ३३

परिभाषापुस्तकसमाप्तः ॥

१४  
४

१२६





॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री सरस्वत्यै नमः ॥ ॥० अथ ऋग्वेदाग्राये राक्  
 लके सूक्त प्रतीक ऋक्संख्यार्कषिदैवत छंदां स्पृनु केमिष्यामो यथे  
 पदेशं न ह्येत स्नानमृते औ तस्मार्त कर्म प्रसिद्धिर्न जाणां ब्राह्मणोषे ३१७  
 यः छंदो देवत विद्या जना ध्यापनाभ्यां संश्रयो धि गच्छेताभ्यामे  
 वानेवं विदो यातया मानि छंदां सि भवंति स्थाप्युं वै छंति गते वा पाह्य  
 ते प्रमीयते वा पापी या न्न वतीति विश्वायते ॥१॥ अथ रुषयः रातर्कि  
 न आद्ये मंडले से शुद्ध सूक्ता महा सूक्ता मध्य मेषु माध्यमाः कृद्दि  
 क् कथं चिद विरोषितं ब्रह्म रुषि मस्त्रि य मनुक्त गोत्र मां गिर संविद्या  
 य स्य वाक्यं स रुषि र्याते नो न्यते सा देवता यदक्षर परिमाणं तच्छं

शैथे सर्व रुषयो देवताः छंदो भिरभ्यधावंस्ति स एव देवताः  
 क्षित्यंतरिक्षद्युस्थाना अग्निर्वायुः सूर्य इत्येवं व्याहृतयः प्रोक्ता व्यस्ताः  
 स स्नानां प्रजापति रंकारः सर्व देवस्य पारमेष्ठ्ये  
 वा ब्राह्मो देवो ध्यात्मिक सूक्त स्नाना अन्यास्त द्विभूतयः कर्म पृथ  
 का द्वि पृथगभिधानस्तु दतयो भवंत्येकैव वामहानात्मा देवता स  
 सूर्य इत्याचक्षते सहि सर्व भूतात्मा तदुक्त मृषिणा सूर्य आत्मा ज  
 गतः स स्युषश्चेति तद्विभूतयो न्या देवता स दवेत दृषिणोक्त मिद्रं चोक्त  
 मित्रं वरुण मग्नि माहुरितियथाभिधानं त्वनु केमिष्यामः प्रये  
 णे दो मरुतो राज्ञां च दानस्तुतयः ॥२॥ अथ छंदां सि गायत्र्युणि



गनुं हती पंडितस्त्रिषु प्रजगत्यतिजगतीशकयति कुर्य  
 त्यष्टी चत्यति धृतय कति प्रकृति राक्ष वि कति स कति सथाष  
 छीचाभि कति नीम सप्तमुत्कृति रुच्यते श्वतुर्विशस्य क्षरादीमि  
 चतस्रस्त राण्यनापिकेने केन निबुद्ध रिजो दाभ्यां विराट् स्वरजौ पाद  
 पूषां तौ सै प्रसंयोगै काक्षराभावा न्य हे दा येतु सप्तवर्गे पाद वि  
 शिषात्संज्ञा विशेष्ठा ननु कामं त एवोदाह रिष्यामो विराट् पाविश  
 दस्यानां श्व वदना अपि त्रिषु भ एवेत्यदे स स वद शौकादरा द्वाद  
 शाक्षराणां वै राजत्रै षु स जागता इति संज्ञा अनादेशे षा क्षराः पदा  
 श्वतुषदा श्व वी ३॥ प्रथमं चंदस्मि पदा गायत्री पंचका श्वत्वारः ष

नामा  
 २

द्वैक श्वतु र्श्वत श्चो वा पद पं द्विः षट्सैकादरा उष्टि गा भोत्रय  
 सप्तकाः पाद निरु न्ध्यमः षट्सैकदति निरु द्वादशक श्वे द्यव प्रथमा  
 यस्या स्त षट्सप्तका ष का ताः सावर्द्धमाना विपरीता प्रतिष्ठा ष  
 द्वौ सप्तक श्व द्वय सी ॥ अयं देवा या मिष्टे अद्यामेत मद्यताम अ  
 भ्यानां वावतः पुरुत म स स च ये ईशान आपः पृणीत प्रेष्ठ नव  
 ॥ ४ ॥ द्वितीयमुष्टि कुत्रिपदा सो द्वादश वि चै श्वे सु रा उष्टि द्व्यधम  
 भ श्वेक तु प्रैष्ठु जा गत चतु षाः ककुम्भं कुसिरे कादक्षिनोः प  
 रः षट्सल दनु शिखा वा म ध्ये वेत्ति पिलिक पध्याद्यः पंचक स्यो  
 षका अनुबा भी चतु षाः सप्तका षिमेवा य इन्द्रमुजंति हरीददी

सैव २

शर्ध शर्धवे



रेकुः प्रया घोषे हरी पस्पि तुं नु मंसी म ह्ये ॥ ५॥ त ती य म नु पु पं च प  
 वे काः षट्क अवे को महा पद पं डिः जग ता व ए क अ व ह ति म ध्ये वे द ह क पि  
 पी लि क म ध्या न व क यो म ध्ये जा ग तः का वि रा ण न व वै पा जः वे यो द री न  
 ए रू पी द रा का स्र यो वि रा ले का द रा का वा ॥ अ न वो जि छं त व सा दि ए ॥  
 मा म् क स्मे प यू षु ता वि वे रू ज्ञा सा वि ए छ मि प्रे हो अ मं गि न रो छ ॥ ६ ॥  
 च तु र्थं हृ ह ती त ती यो दा द रा य अ वे र स र सा हृ ह ती य अ न्यं कु सा नि यु दि  
 से हृ ह ती वा स्तु धो ग्री वी वां स्र अ वे र प रि षा हृ ह ती ए नो म ध्ये द रा को  
 वि षा र हृ ह ती त्रि जा ग तो र्ध्वं हृ ह ती त्र यो द री नो म ध्ये ए कः वि पी लि  
 क म ध्या न व का षे का द रा प णि नो वि ष म प दा च तु र्न व का हृ ह ती वा ॥ ७ ॥

उ

य

मा वि द न्य न्म हो य स्प ति री जा न मि द्यौ र्ये पा त यं ते यु वं स्या स म ध य  
 दि मे नि वो वी र स नि त सं त्वा व यं पि तो न व ॥ १॥ पं व मं पं डिः पं च प दा  
 थ व तु ष्प दा वि रा ट् द रा कै र यु जौ जा ग तौ स तौ हृ ह ती यु जौ वे दि प  
 री ता द्यौ चे त्र सार पं डि रं यौ वे दा सार पं डि म ध्ये वे दि षा र पं डि  
 रा वां यौ वे सं सार पं डिः ॥ २ ॥ दा ना सो वि पि प्रो रा य न रो य नृ षु ला  
 स्थाः स मुं डा अ गि ना ती या म नि दः ष णिं स ह स्रा अ स्या द्यौ ॥ ३ ॥ पं ष  
 वि षु प्रै षु म प दा द्यौ तु जा ग तौ य स्याः सा जा ग ते ज ग ती त्रै षु भे त्रि  
 ए व रा जौ जा ग तौ वा नि सा रि यी न व को वै रा ज ष्वे षु म अ व द्यौ वा  
 वै रा जौ न व क स्त्रै षु म अ वि जा द स्या वै का द री न स्र यो ए क न

सिः



वा॥

दु

४

वि राडु पादादशिन स्रयो एक श्रयोति प्रतीयतो एक सतो ज्योति  
श्रवौ रोष्टका जागत श्रमहा ब्रह्मी मध्ये वेधवम ध्या दौ दशकांवा  
एकाः स्रयः पञ्चु ता राविराह्वी ॥ कस्य नूनं यूपवस्त्रा ये कालिन  
यो वाचा स्वस्तिन इदः अर्धा हवै अतं मे अग्नि ने देण ताभि जपात  
नवा नो समात पत्ये वे द्वाग्नि म्या दादश ॥ १॥ सप्तमं जगती जागत  
पदाष्टिन स्रय स्येव दौ महा सतो ब्रह्म स्रष्टको सप्तकः षड् दौ दश  
को नवक श्रय पल एका वा महा षडितिः प्रदेव म सायः पत्रा वि यति  
कात दं न्ना य चत्वारि ॥ १०॥ अथ प्र गाथा ब्रह्मी सतो ब्रह्म स्यो वाह  
तः क कृ प वे पूर्वो का कुं नौ महा ब्रह्मी महा सतो ब्रह्म स्यो नदो  
महा बाह त गो ह तौ ॥

गुप्ता

करिपादौ द्वावा दितः षोडश श्रयो ॥ जागतो र्थौ एका वृष्टि  
पादाः षोडश का स्रयः ॥ अष्टकौ चां स्रष्टि पादौ जागतौ वा  
एका स्रयः ॥ जागत आ एका श्रय धृति पादौ कु जागतौ  
पादा स्रयो एका श्रय षोडश श्रय र एव वा अष्टक श्रया  
ति धृतौ जागतः षोडश श्रयः ॥ त्रयो एका जागत श्रय तौ  
वा एक इत्यपि ॥ पूर्व सप्तक पादास्तु प्रसंगात् स्वय मी रितः ॥  
पूर्वो मह प्रोष सै साकं जात स्त्रिक दु के षड् गि हो तार मव  
मह इद स हि श्रयो न सप्त ॥ ॥ १४ ॥ ॥ इति परि

अथ वेतमसि जयति सु सु माव



भाषासमाप्ता ॥४॥ अथ श्वेतमेपि ३ वीं सिसु पुमा योत  
मया सचो अवमहिर्दस्सहिर्निधिनि ॥ समाप्तोपग्रंथः ॥  
श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥४॥ ४॥ ४॥ ४॥ ४॥ ४॥ ४॥ ४॥ ४॥

॥

॥५॥

॥ परिभाषास्तकसमाप्तः ॥

॥०

१५

५

इति श्री वैदिकपरिभाषा

समाप्त